



आब के नेपालक मथबा मुडिहे गे माइ !

संविधानसभा निर्वाचनक मितिक घे षणाक संगहि एहिस' सम्बन्धित आचार संहिता लागू भ' गेल कहिक' निर्वाचन आयोग १२ बुन्ने जे आचार संहिता लागू कएलक अछि, ओहिस' देश आ सरकारके थप राजनैतिक ओम्फरी लागि लागि गेल अछि । निर्वाचन कोन विधानके आधारपर कोन कते सदस्य कतेक दिनके लेल चुनएतै तेकर कोना आय-उपाय नहियो रहने निर्वाचन सम्बन्धी आचार संहितास' देशक निर्वाचनके मिति घोषणास' ल'क' सम्पन्न हुअ' दिन धरिमे सरकारी, सरकारी नियान्त्रण वा स्वामित्वमे रहल निकाय वा स्थानीय निकाय कोनो योजना शिलान्यास वा उद्घाटन, नयाँ योजना वा कार्यक्रम स्वीकृति,



शुरु, सर्वेक्षण, अध्ययन वा अनुदान दिअसनके, कर' कराव' नइ पाओत उल्लेख अछि । सरकारी, अर्धसरकारी संस्था तथा स्थानीय निकायमे कार्यरत कोनहुँ कर्मचारी समुदायिक

विद्यालयक शिक्षक आ सुरक्षाकर्मीके निर्वाचन सम्बन्धी काममे बाहेक, आन ठाम बदली, बहुवा करव, काजमे खटाएव वा खाली पदपूर्ति कर' नै पाएत ताहु बातके ध्यान आकर्षण

सरकारके करैत निर्वाचन आयोग- नयाँ पद सिर्जना, विज्ञापन वा तलब भत्ता वृद्धि करव, ग्रेड पुरस्कार सहितक सुविधा आ सहूलियत प्रदान नइ

वाँकी अन्तिम पृष्ठ पर

ओ बात, जाहिमे ओजह आ ओजन छै !

- आबक चुनाव नव अन्तरिम संविधानक आधारपर हुअ' चाही मुदा ६०१के नहि ।
- चुनाव समानुपातिक समावेशीक नइ भ' क' विज्ञ, विशेषज्ञ, पूर्व न्यायधीश, प्राज्ञ, अधिकारकर्मी आ नागरिक समाज आ पत्रकारमेस' हुअ' चाही आ ओहो पन्द्रहस' पचीस सदस्यीय संविधान निर्माण समिति आ आयोगके ।
- संविधान निर्माण आ सरकार संचालनके लेल अलग-अलग इकाइ एवं निकाय रहए ।
- दलके नइ, संविधान राष्ट्रीय भावना एवं जनआन्दोलन मर्म एवं चाहनाक आधारपर बनए ।
- चुनाव अधिकतम तीन/चारिए महिनाक अवधी धरिक लेल हुअएसे नीक ।
- सरकारमे पुर्वन्यायाधीश, अधिकारकर्मी, नागरिक समाज आ ख्यातिप्राप्त व्यक्तित्वक प्रधानता रहए ।
- संघीयता देशके अभिन्न अंग निर्माणके अनिवार्यताके हिसाबे भेने नीक आ पहचानके परभाषा संक्षेपीकरणआ भू-राजनीतिक यथार्थक आवश्यकतापर हुअए ।

बटहगनी ने लजाय, उन्टे उपराग दिअ' जाय

राप्रपाके ओतमे, फन थकुचाक' भस्साथैर बैसल ज्ञानेन्द्र कमल थापासनके नेता मुहें सडुकक बलधिडरो बले नागार्जुनस' नारायणहिटीमे पुनर्स्थापित भ' २०४७ सालके संविधानद्वारा प्रतिगमनी राजकरबाक जे गुंडाचोर फाँकि रहल अछि ओ अनर्लगल प्रलापस' बेसी किछु नइ अइ । प्रतिगमनी राजा ज्ञानेन्द्रके बलपेली कुशासनस' देशमे मचल राजनैतिक बवाल आ असंवैधानिक तानाशाही सरकारके गलहत्या द' औकाइत छोट कर'के हिसाबे जे दोसर जनआन्दोलन सफल भेलै आ संविधानसभाद्वारा संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्रात्मक पञ्चतिक नव नेपालक संविधान लिखबाक जे जनादेश प्राप्त भेल रहै, ओ जेठ १४ गतेके संविधानसभा समाप्तिक घोषणक संगे प्रतिगमनी राजाके पुनर्स्थापनक वाट खोलि देलकै



ई बात बूमनाइ डिठै आ गरिअइ अइ, से बात आम जनता कहि रहल अछि । कमल थापासनके लोकके ई बात बुझइके चाही जे ओकरे सनके राष्ट्र विरोधी तत्वके सरकारमे रहल कार्यकालमे प्रतिगमनी राजाके नाक दडरिक' छुलकले बिलटले नारायणहिटी दरवार छेड़ पड़ल रहै । आइ जे राजनैतिक वितण्डा ठाढ़ भेल छै आ लोकतन्त्र विरोधीशक्ति जे जेना फन काढ़ि

रहल अछि ओ निकम्मा असक्षम राजनेतासबके चलते । नइ त' आइ मल्लिक आयोग आ रायमाम्मी आयोगक प्रतिवेदन अनुसारक अभियुक्तपर आवश्यक कानूनी कार्यवाही भेल रहितै त' एखन सनके राजनैतिक अराजकता, उदण्डता आ दण्डहीनता अनेरे नेपालक छप्पर चढ़ि काल जकाँ नइ डिङिऐतै आ ने कमल थापाके गिदरभभकी लोके सून' पड़ितै ।

छोड़ भार मोर डूब' दे



नेका एमाले सहित गोरवीसे राजनैतिक दलसब काठमाण्डूमे राजनैतिक उखला करैत भट्टराइ सरकारके राजिनामाक मांग सहित नव सरकार गठनक' सत्ता पएवाक जे किरदानी क' रहल अछि ओकर छजन्ता एखन ध' नै रहल छै । संविधानसभा भंग आ संघीय संरचना विकास सहित नव संविधान नै लिखा सकल अछि, ओकर बहुतो जिम्मेवारी एहु दल सवपर छै । देश एखन घोर अन्तरिक अवस्थास' गुजारि रहल छै । देशमे समुचित विधान आ कानूनक अभाव भेने राजनैतिक गतिरोध विकराल

रूपस' आगूमे ठाढ़ छै । राष्ट्रिय आवश्यकतानुसार संघीय संरचना विकासक संगहि नव नेपालक संविधान निर्माण क' देश आ जनतास' विश्वास प्राप्त करएके बेरमे इसब फेरु ओएह सत्ता हथियाएवक जे धिनाओन खेल खेलि अनेरेके राजनीति क' रहल बात केकरो तेहन भ' क' पचि नै रहल छै । समयपर ढंगस' देशके बारेमे सोचि नै सकने, नेपालक राजनीति वीचे वाटमे ओह्ने मुहें खसल रहल अवस्थामे, दलसबके कर्तव्य बनै छै, जे ओसब मिलि व्यवहारिक' संविधान निर्माण,

संघीयताक विकासक' शुभ-शुभक' देश आगू बढए, तेकर जिम्मेवारी विपक्षीयो दलके सेहो रहल अछि । ओसब एखनहुँ अपन शक्ति आ समय वेवाइल नै जाय द' राजनैतिक विश्वास आ साख प्राप्त करए, तखनहि जनता पतियाएबला अछि । सत्ता आ खुरसीक एहन-एहन बहुतो खेल लोक देखिक' नकमाइन भ' गेल अछि, आ बलधकेली चुनाव आ निकम्मा संविधानसभाके जिअएवामे लोकके विश्वास नइ रहल बातके दलसब बुझि जे जाय, त' बड़ नीक रहतै ।

समाचार विश्लेषण

नेपालमे संघीयताक मुद्दा बहुत दिनस' अइ आ बेरा-मौकापर बहुत जोरशोरस' उठैत आएल अछि । ओना मानसिक रूपस' नेपाल संघीयतामे जाक' लोकतान्त्रिक गणराज कायम भ' गेल होइतहुँमे, एखन एत' कोनो संघीय राज बनि पाएल अछि आ ने गणतन्त्रात्मक पञ्चतिक विधान बनि पाएल अछि । संविधानसभाद्वारा संविधान निर्माणक अन्तिम चरणमे आबि, संघीयताक मुद्दा बेतरिकास' ओम्फरा आ लटपटाक' खटाइन भ' गेल अछि । संविधानसभा सर्वशक्तिमान भइयोक' अशक्त आ असक्षम अहु दुआरे भ' गेल जे ई संघीय संरचना आ एकर संवैधानिक सुनिश्चितता नै करा' सकलकै । एकर नेतासब

'मान नै मान हम तोहर मेहमान' एहनो कहूँ भेलैए !

संघीयताक मुद्दापर अपने कन्फ्यूज छल आ देशक बहुतो जनता संघीयताके मुद्दा ल' जे जेहन मांग आ दवाव द' रहल छल, ओ सबके सब राष्ट्र निर्माण आ सुशासनके लेल आवश्यक छलै कहब कठीन अछि । मानल जे अपन-अपन सामाजिक सांस्कृतिक अस्मिताक पहचान आ स्वायत्तता बोधके लेल संघीयता अनिवार्य होइतहुँम, भाषा-संस्कृतिस' बनैत पहचन आ बहुसांस्कृतिक प्रदेशक सत्यके नै विसरबाक चाही । आवश्यकताक अनिवार्यतास' बेसी बहुतो ठाम देखासिख ीआ संघीयताके

बिगारहुला' मनमना प्रदेश आ प्रदेशक मांगस' राजनीतिक दलसब आर्तकितसनके भ' छलैथ । संघीयता सम्बन्धी विवाद विशेषक' तराइ-मधेशमे छै । संघीय राज निर्माणक अनिवार्यता आ जनचाहना बीचमे राजनैतिक सन्तुलनके नीकस' अप्रथमतः परिभाषित हअइके चाही । आवश्यक अनावश्यक मांगके विकट्टक' सम्बोधन भेनहि नीक, नै त' प्रचण्ड जकाँ सबके हवादारी प्रदेश बँटने बातके वतडर मचवेटा करैत छै । एहिना मधेशी दलके अपन मधेश प्रदेशके सम्बन्धमे,

नेपालक बदलल राजनीतिक परिवेश आ परिप्रक्ष्यमे पुनर्मूल्यांकन सहित एकरा नव ढंगस' परिभाषित क' एकर सम्पूर्ण यथार्थके जनताके सुसूचित करबाक चाही । एगारह प्रदेशपर भेल समझौता जँ कायमे रहितै त' नेपालमे आइ एहन कोनो राजनैतिक समस्यासब रहबे नै करितै । मधेशक मुद्दाके नव मूल्यांकन आ परिभाषा एखन अहु दुआरे आवश्यक छै, जे पश्चिममे थरुहट आ अखण्ड सुदूरपश्चिमक आन्दोलन आ मध्यमे मिथिलाराजक मांगके लेल बढि चुकल राजनीतिके ओहिना रोकल

नइ जा सकैछ । दू-दूटा मधेश आन्दोलनके दुहाइ देव'बलासबके ई नै विसर'के चाही जे पंचायती व्यवस्थाके अन्त कर'लेल ०३६ आ २०४६मे आन्दोलन भेलै । २०४७मे नव संविधानो बनल । मुदा प्रतिगमनी राजाके अन्त आ संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्र स्थापनाकेलेल २०६३क महान जनआन्दोलन भेलै आ संविधानसभा द्वारा नव नेपालक संविधान निर्माणक सबटा व्यवस्था भेलै । दोसर जनआन्दोलनक सन्दर्भ प्रथम जनआन्दोलनके स्वीकृतिके पाछु कइए देलकै । राजनैतिक परिवर्तनक संगहि राजनैतिक मुद्दा आ आवश्यकतासब बदलितै रहैछै, एहि बातके स्वीकारहि

चाही । जँय कि मधेशक राजनीतिक भूगोलक सीमा आ नक्शा परिवर्तनक बेरि आबि गेल छै । एहनमे मधेश आ मिथिलावादीक बीचमे संघीय संरचनाके विषयपर संवाद आ वहस चलब जरूरी बूमफाइत अछि । केहनो द्वन्द आ संघर्षक अन्त बार्ता आ सहमतिस' होइत आएल अछि आ हरहर-खटपटस' सुपुक्क सुन्नर संघीयताक ने विकास भ' सकैछ आ ने चलिए सकैछ, तहन जाँघ जोड़िक' एक ठाम बैसबाक मोनो विकल्प नै छै । महत्वपूर्ण बात आव ईहो देखाइ दैछै जे मिथिले आव मधेशीक मजगूत आ विश्वस्त पहचान देव'मे सामर्थ्य रहल अछि ।

प्रकाशक : **कुमार भास्कर**
सम्पादक : **प्रा. परमेश्वर कापडि**
सहसम्पादक **कैलास दास**
कार्यालय : जनकपुरधाम-१६, पुलचौक
फोन नं.: ०४१-५२४९५२
मो.नं. : ९८४४०२२५९४,
: ९८४४०५३९७३
: ९८४४१००१६४
ईमेल : **dhuadhaja@yahoo.com**
मुद्रक: **त्रिदेव अफसेट प्रेस**
जनकपुरधाम, फोन नं.: ०४१-५२२५९०



सम्पादकीय

अग्रगमनके लेल वैधानिक आधारके खोजी-नीति

बेतारिकास’ संविधानसभाके विघटन लजास्पद ऐतिहासिक दुर्घटना होइतहुँमे नेपालक नेतासब एहिस’ पाठ नइ सिखिक’ फेरु पुरने ढाठीक राजनैतिक सत्ताक खेल’सनके हानि-गरानिक काज कर’ लेल उद्बत अछि, से नीक नहि । अनचोकेमे मुँहेभरे खसल देशक जनता एखन सकदम अइ आ हक-अधिकारकेलेल आन्दोलनी दवाव देब’बलासबके सेहो स्तब्ध रहने, देशमे बड़का गुम्मी-चुप्पी जे पसरल अछि ओ तबधने विष्फोटक आ बेसम्हार भ’ सकैए । दलसब अपन-अपन राजनैतिक असफलता आ विनु संविधान बनएनहि देशक राजनीतिक सबटा बाट बन्नक’ जे भयावह स्थिति उत्पन्न क’ चुकल अछि, तकर दोख निर्लजतापूर्वक अनका आनपर थोपि अपन पल्ला फारि शुरुखुरु मठोमाठ भ’ रहल अछि, ओ बहुत अधलाह अछि ।

एखनुक समय बहुत संवेदनशील आ महत्वपूर्ण अछि आ समग्र राजनीतिक स्थिति-परिस्थितिक वृहत् मूल्यांकनक संगहि तटस्थ आ निरपेक्ष भावक संघीयताक निर्माणमे आएल अराजक व्यवधानके सेहो समीक्षात्मक विश्लेषणस’ ठोस निर्णयपर पहुँच’के चाही ।

संविधानसभाके फेरुस’ जियाब’के सबटा आवश्यकता आ कानूनी औचित्य पूर्णतः समाप्त अइ । पुरना विघटित संसद जे जियाओल गेल रहै से प्रतिगमनी राजाद्वारा अलोकतान्त्रिक ढंगस’, सत्ताके ‘कू’ क’ अछैते औरदे बलजबरदस्ती मारि देल गेल रहै । दोसर जनआन्दोलन ‘कू’ कर’बला प्रतिगमनी राजाके घोटिया धकियाक’ सिंहासनपरस’ उतारने रहै सेहे नइ, वंश परम्परा अनुसारक राजा आ राजशाहीके समेत छाँटि-पाडि ज्ञानेन्द्रके अदना-पदना लोक बना देने रहै । एहि संविधानसभाके केउ अछैते औरदे विघटन नइ कएने छै । सर्वोच्च एकर म्याद थपके पूर्ण वन्देज लगौने छै आ ई अपने सतासोरहि निकम्मा निर्लजा सभासद सबके कारणे असफल आ औचित्यहीन भेल अवस्थामे, एकरा फेरुस’ जियाब’के खेल आव अनर्गल प्रलापटा भ’ सकैए । एहि देशके नागरिक सर्वोच्च छै नइ कि संविधान बनब’मे असफल राजनैतिक दलसब । ताँ दलीय सर्वोच्चताके स्थानपर सर्वपक्षीय सर्ववर्गीय सहमति सम्मेलनस’ राजनैतिक म्यान्डेड प्राप्तक’ संविधान निर्माण समिति, नव अन्तरिम संविधान आ सरकार गठन क’ देशक राजनैतिक गतिविधि आ अग्रगमनके वैधानिकता दिआ, देशके राजनैतिक थप दुर्घटनास’ उगरास पाव’ चाही ।

संघीयता - सन्दर्भ

हमरा चाही मिथिलाराज



श्याम सुन्दर शशि.

वैशाख १८गते सोमदिन, नेपालक इतिहासमे कारी दिनक नामसँ अंकित होएत । कारण अपन पहिचानक वास्ते शान्तिपूर्ण धरनापर बैसल मैथिलसभके लक्षित कऽ भिषण वम आक्रमण कराओल गेल । जाहिमे पडि पाँचगोट मैथिल शहादत देलनि । तीन दर्जन घायल भेल । किछु गोटे एखना काठमाण्डूमे उपचार करा रहलाह अछि । मिथिला राज्य संघर्ष समितिक आह्वानमे भोरक आठ वजेसँ ११वजेधरि रामानन्द चौकपर शान्तिपूर्ण धरनापर बैसवाक कार्यक्रम छल । साढ़े आठ वजेसँ धरना सुरु भेल छल । ओहि दिन भोरक आठ वजेसँ एकीकृत नेकपा माओवादीक वरीष्ठ उपाध्यक्ष किरणजीक पत्रकार सम्मेलन सेहो रहैक तँ पत्रकार सम्मेलनमे सहभागी भऽ साढ़ेनौ वजे हमहुँ रामानन्द चौक पहुँचल रही । ओहि ठामक वातावरण अत्यन्त रोमांचक रहय । सभगोटे एक आपसमे हँसी ठट्ठा कइ रहल छलाह । बीच बीचमे मिथिलाराजके संवैधानिक सुनिश्चितताक वास्ते गंधन-मंथन सेहो भ’ रहल छल । सर्वत आ सुपारीक दौड़ सेहो चलि रहल छल । सर्वत बटवाक जिम्मा विमल शरण,मनमोहनआदि लेने रहथि आ सुपारी बटवाक भार हम उठौने रही । भगवान भास्कर अपन रौद्र रुपक प्रदर्शन कऽ रहल छलाह । मुदा गर्मीसँ वेपवाह धरनाकारीलोकनि अपने आपमे गप करवामे तल्लीन रहए । अशोक भाइ आ परमेश्वर भैया कार्यक्रमके रुपरेखा बना रहल छल । एहि बीच मिनाप अध्यक्ष सुनिल मिश्रजीके चाहक अम्मल लगलैन ओ विष्णुकान्त आ सुनिल मल्लिकके संग लऽ चाह पिव’ चलि गेलाह । एम्हर सर्वत आ सोपारीक दौड़ चलिए रहल छल । हम सुपारी बाँटिए रहल छलौ कि पण्डालक पश्चिम— उत्तर दिसिससँ जोड़क आवाज आएल । जनु धरती फाटि गेल हो वा आकाश धरतीपर खसि पडल हो । धराम ढ़ढ़ढ़ढ़ढ़ढ़ढ़ढ़ढ़ढ़.....!



भयंकर आतंकस’ रामानन्द चौक हिलि गेल । भगदड़ मचि गेल । जे जाहिठाम छल ओहि ठामसँ बाहर दिसि भागल । जे सामान्य घायल छल से घिसिआइत तिरिआइत बाहर निकलल । जे अशक्त छल से ओहि ठाम कुहड़ि रहल छल । हम ने ताहि तरहक घायल रही आ ने एतेक होसमे जे पण्डालसँ भागि पडाइ । हम ठामक ठामे खाढ़ रही । ठममुरगी लागि गेल । की करी आ की नहि करी तकर निर्णय नहि कऽ सकलहुँ । सुरुमे पण्डालमे धूवा मात्र दृष्टिगोचर भऽ रहल छल । धूवा कनेक साफ भेल त देखैत छी —विमल शरण पडल अछि । विमल शरणके छटपटाइत प्राण त्याग करैत हम अपना आँखिसँ देखलहुँ । भगवान करए ई हमर जिनगीक अन्तिम दृश्य हो । दक्षिण भर रंजु कुहरी काटि रहल छलीह—सोनू.....एम्बुलेंस.....! आ किछुए कालक बाद रंजुक गला अवरुद्ध भ’ गेलै ।

उत्तर भर भगरु दास आ सुरेश उपाध्याप वेहोस पडल छल । जहन कनेक सूध्रि आएल त दक्षिण दिसि भगवाक उपक्रम कएल । भागएके वास्ते पैर आगां बढवैत छी त देखैत छी परमेश्वर भैया माने मिथिला राज्य संघर्ष समितीक अध्यक्ष प्रो.परमेश्वर कापडि, नीचामे पडल घिघरी काटि रहल छथि । हुनकर हाथ पकडि घिचलिऐन—‘भैया चल ...!’

ओ हमरासंग अएवाक हिम्मत कएलनि मुदा घुसुकि नहि सकलाह । कहलथि —‘हमरा बुते चलल नहि हैतो ।’कहलिऐन—‘भैया फेर दोसर वम फुटैत त ?’ताहिपर ओ हमरा कहलनि—‘तौं भागि जा’ । ‘हम दक्षिण दिसि पडैलहुँ । मुदा मोन नहि मानलक । मोनहि सोंचलहुँ यदि परमेश्वर भैयाके उनैस बीस भ’ गेलनि त भौजीके कोन मुह देखाएब । फेरसँ घूरिक’ अएलहुँ आ हुनका उठैवाक उपक्रम कएलहुँ । ओ वेहोस भ’ गेल छलाह । हम एसगर हुनका बाहर निकलवाक अवस्थामे नहि रही । तकरावाद मिनाप अध्यक्ष सुनिल मल्लिक आ पूर्व अध्यक्ष

सनिल मिश्र आबि गेल रहथि । हुनकासभक सहयोगमे परमेश्वर भैयाके अस्पताल पहुँचाएल गेल । ओम्हर रंजुके यदुवंश भा आ विनोदानन्दजी अस्पताल ल गेल रहथि । तकरावाद स्थानीयवासीसभक भीड़ जम्मा भ’ गेल छल । सभगोटे मिलिक’ मृतक आ घायलके जनकपुर अंचल अस्पताल पहुँचौलनि ।

अपन पहिचानक खोजीमे रामानन्द चौकपर शान्तिपूर्ण धरनापर बैसल आन्दोलनीसभके लक्षित क’ कराओल गेल वम विष्फोटमे पडि शहीद होवएवलासभमे जनकपुर ८ बलवा टोलक विमल शरण, मिथिला

नाट्यकला परिषदसंग सम्बद्ध प्रशिद्ध अभिनेतृ रंजु भा, रिक्सामे चढि लाउडीस्पीकरसँ प्रचार प्रसार करएवला भगरु दास आ रामानन्द चौकेपर मोबाइल मर्मतके दोकान कएनिहार सुरेश उपाध्याय छलाह । विमल शरणके घटना स्थलेपर आ अन्य तीन गोटेके उपचारक क्रममे जनकपुर अंचल अस्पतालमे मृत्यु भेल छल त दीपेन्द्र दासके सघन उपचारके क्रममे काठमाण्डूमे भेल छल । विष्फोटमे पडि संघर्ष समितीक संयोजक परमेश्वर कापडि, नेपाली कांग्रेस जनकपुर नगर कमिटीक सभापति धीरेन्द्र मोहन भा,जनकपुर उद्योग वाणिज्य संघक सदस्य शिवशंकर साह हीरा, रामानन्द युवा कमिटीक पूर्व अध्यक्ष रमेश ठाकुर,महासचिव मनमोहन साह,स्टेशन एरिया युवा क्लवक अध्यक्ष देवू यादव, दीपेन्द्र दास सहित अढाई दर्जनसँ बेसी घायल भेल छल । दीपेन्द्र दाससहित शिकिस्त घायल १९ गोटेके ओहि दिन हेलीकप्टर आ जहाजसँ काठमाण्डू पठाओल गेल छल । २०६१ सालमे स्थानीय युवा क्लवसभक बैसारमे मिथिला राज्य संघर्ष समितीक गठन भेल छल । प्रो.परमेश्वर कापडिक संयोजकत्वमे गठित एहि संघर्ष समितीसभमे एहि ठामक सामाजिक संघ संस्थासभ छल । जे स्थापना कालहिसँ मिथिलाराज नामाकरणक वास्ते विभिन्न कार्यक्रमसभक आयोजन करैत आएल छल । संघर्ष समितीक सम्पूर्ण आयास सांस्कृतिक रुपें आगां बढि रहल छल । वैशाख १४गते एकीकृत नेकपा माओवादी राज्य पुनर्संरचनाक वास्ते १०गोट प्रान्तक प्रस्ताव लोने छल । जाहिमे मिथिला भूमिके विराट मधेसक रुपमे नामाकरण कएल गेल छल । पाँच हजार वर्षसँ बेसीक इतिहास,सुदीर्घ सांस्कृतिक परम्परा, विश्व प्रतिष्ठित मैथिली भाषा आ शस्य श्यामल एहि मिथिलाक नाम हटाओल गेलाक बाद मैथिलसभमे आक्रोश व्याप्त होएब स्वाभाविक छल । आ वैशाख १५गते भोरे मिथिला नाट्यकला परिषदमे एकगोट बैसार भेल आ निर्णय भेल जे प्रमुख जिल्ला अधिकारी मार्फत प्रधानमन्त्री,सभामुख आ विभिन्न राजनितीक दलके मिथिलाराज नामाकरण वास्ते ध्यानाकर्षण कराओल जाय । ध्यानाकर्षण कराओल गेल आ ओहि दिन सन्ध्याकाल रामानन्द चौकपर एक घन्टा चक्का जाम सेहो कएल गेल । दोसर दिन अर्थात वैशाख १६गते भोरक आठ वजेसँ ११ वजेधरि पिराडी चौकपर शान्तिपूर्ण धरना देल गेल । १७गते रविदिन अपरान्ह जानकी मन्दिर प्रांगणसँ मिथिलाराजक समर्थनमे हस्ताक्षर अभियान आ सन्ध्या जानकी मन्दिरमे मोमवती प्रज्वलन कएल गेल । १८गते भोरक आठ वजेसँ ११वजेधरि रामानन्द चौकपर शान्तिपूर्ण धरनापर बैसल मिथिला अभियानीसभके लक्षित कऽ १०वजे वम विष्फोट कराओल गेल ।

ओ जे कएलनि E-mail dhuadhaja@yahoo.com

अहाँ नै कहबै त’ लोक बुझतै गमतै केना ? अखैनतो जे मुहजाब लगाक’ गुम्मी सघनो, ठौंसा वेड फुलल बैसल रहबै त’ बदिअल-बहसल विन विचारीसब उदाम बनल बलधौसी बलपेली कैरते रहत ! एकरा रोक’ टोक’ आ सैर-साबतु कर’के लेल संचारी बनू आ सोभे निशंक भ’क’ E-mail करु !

हमर जे बसि चलतै त’ गाइ-गोरु जिका नेतासबके डेडबितिए आ सुधि-मुरि आ हर्जाना सहित सभासद सबस’ सबहे खाएल तलव-भत्ता धरैबितिए । मर तोरी भला करीके ! जनता ओकरा संविधान बनब’ ल पठएने छलै कि अपन भोथरा मोट कर’ ला’ ?

देशमे जे राजनैतिक दुर्घटना नै हुअ’ चाहैत छलै से भ’ गेलै । तैयो आव सहमति आ समभौताके राजनीतिस’ नेपालके उगरास आ विकास भ’ सकैछै ।

सन्तोष थापा, राजविराज

शिवनाथ यादव, सिसबनी

- महाकान्त भा. बघचौड़ा

आह्वान



– अशोक दत्त

निर्दोष मानव रक्तसँ
रक्त-रञ्जित
मिथिलाक छाती
कुहैर रहल अछि ।
कारामे बन्द कऽ देल जाइछै
अधिकार
अन्हार खोहमे धकिआओल जाइछै
आवाज
केना करु शान्तिक बात,
सर्वोच्च आसनपर
विराजमान अछि
प्रपञ्च
जोड़पर अछि
आतङ्क ।
खंखार कुकुरक नोचसँ
सोनिताएल देह लेने
केना सूति सकै छी
केना भऽ सकै छी निश्चिन्त
जखन तागसँ कटल गुड्डी जेकाँ
पताए लागल अछि
वर्तमान
भविष्य
तैं उठबै छी गाण्डिव
अर्जुन जेकाँ,
सिंहनाद कऽ जगबै छी
सुतनाहरकें
हौ, उठऽ
देखहक
देश बनल अछि कुरुक्षेत्र
समधानऽ लक्ष्य
मिथिला लए
अस्मिता लए
शान्ति लए ।

मिथिलामे रंजु

काशिनाथ भा

आब मिथिलामे घर-घर जिवइय रंजु
नोर मैथिलक’ सैदिखन पिवइय रंजु
मान चाही त’ सबकेउ पहचान ला लडू
देखु बनिक शहिद ई कहइय रंजु

जाति-पातिक भेद नइ अपनामे लडव
सब जाति आइ शहीद ई कहईय रंजु
अछि मिथिला महान केउ बुझउ ने बुझउ
मर्म मैथिलाक सदिखन बुझइय रंजु

बिनु लेने ई मिथिला नइ पाछ हटव
खाउ हमरे सपथ ई कहइय रंजु
अइ मिथिलाके कान्ति मैथिलक हाथ
देखू कान्तिके ल’क’ घुमइय रंजु

भेल पाँचटा शहिद अइ तकर नइ चिन्ता
राज मिथिलाक चिन्ता करइय रंजु



मिथिला महान ल’क’ रहबौ



– विजय दत्त मिश्र

तोहर बम बिस्फट स’ निकलतौ केवल धुवाँ
हम्मर मन बिस्फोटस’ मचतौ प्रलय, भ’ जेवै
अस्तित्व विहिन आ विलय
तुँ जान ल’ क’ रहले त हम मान ल’ क’ रहबौ.....१.

के कहै छैऩ उठलैय अर्थी हमरा वृष्टिमे वो छल डोली
बन्दुक स’ नीह बन्न हेतैक अधिकारक बोली
अहिना जौ करैत रहबै त हमहुँ परान ल’ क’ रहबौ ।
तों रह सावधान । सावधान ।

लाख करवै अड़चन आ बाधा
हम ल’ क’ रहबौ आधा आधा
तों घर लेबे त हम दलान ल’ क’ रहबौ ।
तों रह सावधान । सावधान ।

एहि श्रृष्टिक निर्माता हम छी
तै नहि ककरो स’ कम छी
चारो युगमे छी सम्मानित तै
हम अप्पन सम्मान ल’ क’ रहबौ ।
तों रह सावधान । सावधान ।

समुद्रक पानि नहि सुखत
मैथिलक शीर नहि भुक्त
बन्द करतके स्वतन्त्र विचार
हरण करत के मौलिक अधिकार
तों राति अन्हरिया छे त
हम नवका विहान ल’ क’ रहबौ ।
तों रह सावधान । सावधान ।

जौ इज्जतिपर होएत आघात
हमहँ करब प्रतिघात
मारवै लात पुछबौ बात, आ करवै कात
तोंहर जत्था जिआन क’ क’ रहबौ ।
तों रह सावधान । सावधान ।

भाइ-भाइ आ जाति-पातिमे बाँटि दै छे
हम्मर आरि अपने हाथे छाँटि दै छे
चटटानके केओ रोकि सकलैय
नदीक बेगके केओ बान्हि सकलैय
तों लाख फिरशान भ’ क’ रहबे
हम अप्पन निशान ल’ क’ रहबौ ।
तों रह सावधान । सावधान ।

हम सब नैतिकवान छी मर्यादा नहि नाँघव
छी कर्तव्यनिष्ठ हाथ पसारि नहि माँगव
चाही त छीन लेव एक एक क’ गनि लेव
अप्पन वस्तु चिन्ह लेव एक दु तीन लेव
कोशी स गण्डक, कमला, बलान ल’ क’ रहबौ ।
त तों रह सावधान । सावधान ।

नैमिकाननक मोहार स्वर्णस महादेव
आवश्यक पडलापर दू चारि शिश अओर चढ़ा देव
जकरा लग जानकी स्वयं रहत
वो दोसर स’ नहि मेटतै
हम अपन पहचान ल’ क’ रहबौ ।
तों रह सावधान । सावधान ।

आइ आ काल्हि अछि मरहिके
मातृभूमिके लेल अछि किछु करहिके
अस्मिताक रक्षा हेतु देव प्राणाहुती
ई हमर परम कर्तव्य थिक
जे काटि चढ़ाबय अपन सर्वस्व औंठा
ओकरे नाम एकलव्य थिक
तों चाहे कतवो किछु क’ ले
हम मिथिला महाना ल’ क’ रहबौ ।
तों रह सावधान । सावधान ।

व्यंग्यः संविधानसभाके हुद्दा-पौना विटगरहा

परमेश्वर कापड़ि

कहलक जे पद-बातके बड़ाइ घर चुबैअ गे दाइ ! अगिलह अनटोटल बात हमरा फुटलीयो आँइखे नै सोहाइअ ।अनेरे नेतवासब घनघोल कएने रहत जे जनतासब सार्वभौम अछि । बड़ बड़ाइ छिलकाएत माओवादीसब जे देश जन गणतन्त्र बनाएब । जनतन्त्र अरुमे चाही प्रचण्डके । भल भाइ रे पिछड़ल, दलित आदिवासी जनजाती, सीमान्तकृत वर्ग, मधेशीसब सबदिन गलित दलित रहओ । लेलिन आ माहोवादीए जमानाके भाव धएने रहओ । गण माने बन्दूक तन्त्र चाही मरतरिया वैद्यमे । देशमे लड़-गोइठा लागल रहओ आ हमसब सिखावधि क’क’ राजनैतिक फिल्ली फारैत रही ।

फूठ साँच बातके कन्न्ह क’क’ नेडरएने पाइ । से हम दुलकी मारने दलकल गेली गाम । गामके मुहथैरेपर भेट गेल फलतु बेलदार । ओहो माथापर धान-विआक मोर नेने, रपटल पेरिए खेतपर धड़फराएले चलल जाइत रहए । ओकरा बिनु विलमएने पुछलिये— फलतु कक्का हौ ! संविधान त’ नै बनलो ?

कौर कामइ नीक आ हर कामइ नै नीक । कक्का सन कमकरदा गिरहत मरलो माइ-बापके गोनेर खेन्हरा तरमे फाँपि, पहिने खेतीके ताक देखैहवे । से उ हमरा आफत बलाय बूमि कन्छकाटि रस्ता नपैत कहलक— हे हमरा खेतमे विआ बाओग होइ हय । खेत चासल होतै भ’ गेल आ हेडएतै से वरही है हमरे सडमे । हट’, हमरा जाय दा’ !
— सूनन’, कहै छियो जे संविधानसभा विघटन भ’ गेलै ! संविधान बनवे नै कएलै ।
— जा से नै बुझलिये । बनब’बला जन-मिस्तिरी लुरि-बुइधबला नै रहै की ? आकि समयपर साइह-सरमजान, खेबा-खर्चा नै पुडाब’ सकलै की ?
— नै बुझलहो कका । संविधान माने देशके नेम-कानून ! नेतासबके काम ।
उ त’ खौफ गेल आ लोहछले बाजल— आ दू मरदे नैहतन ! हौ एहने अनोन बात बजैछा । हम नेताफेता, रजनैतिके बीच- मांफमे नै पड़ै छी । जाने जौ कि जाने जाँता ! जाइत जाइत कहैत गेल— तों कामइ छा । हम जाइछी । हमर काज बरदिआइय !

००
फलतु भगबाके त’ भगवे कएल हमरास’ जान छोड़ाक’ महज हमर मनक ममोलबा मनेमे ओढ़ी-घै कटैत रहि गेल । तोलेमे देखलिये डोलडालस’ भेने लतराके लतरल अबैत । ओना लतरा जाइतके है मलाह तैयो भारी लरक्का आ छक्का पंजा जानबला है । केहनो फैं-फगड़ा आ पैनचैतीक घुरची-ओफरीके सुतिया बिहियाक’ तरद’ तोड़ि-फाड़ि दैहै । से खरनाएले हम ओइ माइजनके मन्हूआएले पुछलिये— देखहोन बवा हौ, संविधाने नै बनलै ! दूटक दूटप्पी जबाब देलक— नइ वन’के छलै से नै बनलै ।
—आ धूर मरदे । हौ एहन ओलसनके कवकब बोल केना बजला ?
—कहाँलियो त’, सब वांसके दाहा नै बने है । संविधानसभा त’ कोइटे रहै ।
सोफरफी सोफराएल बात रहैतै त’ चटद’ बुमि जइतिये । ओकर त’ बाते रहै ओफरी-घुरची लागल । से बुफहीमे नै हाएल । तैपर हमहीं खौम्फाक’ कहलिये— संविधान नइ बनलै । कानल कनियाँसनके संघीयता रहिए गेलै ।
— देखह, बातके गौरस’ अखियासिक’ पिवहो, तब बूमिमे अएतो । संविधानसभामे संविधानसभामे दस/बीस गोटे रहितै तवन’ बात विचार मिलितै । ओइमे त’ रहै सत्तासोरहि ककोरवा विआन, ककोरवे खायबला । से सब मिलके देशके खखोरिक’ खा गेलै ।
— आव जनताके की होतै ? देशक राजनीतिक ऊँट कोन करे बैठतै ?
— जनताके किछु कहीं नै भेटतै, ऐ निपनियाँ छुतहरा नेतवा हाथे ।
— तैयो माइजन कका हौ, कोनो त’ दोसर दोग उपाय होतै ?
— मर तोरी भलाकरोके नैहतन ! रे भ’ की नै सकै है ! कर’बला आरुढ़ चाही ।
— त कहेन’ कीसब कर पड़तै ?
—बात बड़ साफ है । बेर-बेर नाढो बबुर तर आव नै जइहें । संविधानसभा भुस्स थुस्स ! एकोरो हटा फेक । फारि बहारिक’ नेतबो सबके कात क’ दौक । दलसबके लौपरी लटारहममे नै परौक । तब करबाके की करौक ? त’ आव विज्ञ, विशेषज्ञ, पूर्व न्यायधीश सबके ल’क’ नाइन्हेटा निस्सन संविधान निर्माण समिति आ आयोग गठन क’ दौक । आ हे सून’ ओकरा कैह दौक किटुआ जे बेसी नै दू-तीने महिनामे देश आ जनताके मन माफिक संविधान बनाक’ लाबि दा’ । ओमहर आम चुनावके सिल्ली-पट्टी धरबैत रहओ । सरकारो देशमे चाही त’ ओकरालेल सर्वपक्षीय बैसारस’ पूर्व न्यायधीशके प्रधानमन्त्री बना मन्त्री मण्डलो छोट छिन बनादौक जे चारि’ छौ महिनामे चुनाव कराक’ पाट बैठ जाय । कम्मे दिनमे सब काम निमनस’ निपटा लौ ।

हहाएल फफाएल अबैत रही कि एकटा दलानपर बहुते जर-जुआनसबके उजहिया भीड़ देखलिये । उतसुकता भेल । जा क’ पुछलिये त पता लागल जे उसब मशाल जुलुश ला’ त’ मारि-पिट आ तोड़ो-फोड़ ला’ लाठी फराठी बनबैत रहै । उसब कोनो पार्टी विशेषके नइ भरहा कार्यकरतासब रहै से बूमिमे आएल । माइ अनुसारक भीड़ जुटाव’, वन्द-हड़ताल आ नारा-जुलुशके सड तोड़फोड़के ठिका-ठनका सेहो लै छै । हरले खगतै, अपने बेगरते हम ओकरो स’ पुछलिये- हौ संविधान त’ नै बनलै ! तब की होएतै ?

ओइमेस’ एकगोते फरड़ा छोलैत बाजल— जे होतै से होतै । दोसर हमरा बातके दोहसबैत बाजल- हमरा सबके ई किरदानी देखने, बुझै कैला नै छिये जै की होतै । बन्द-विरोधके अराजकता मचतै । सड़क गरमाक’ नेतासब देशके नाकेसुते पाइन पिअएतै । केहनो नै हुअबला काजके नाक दड़ैतक’ छुलकले कएतै !
प्रश्नके जवाब कम आ हमरा उल्लु वसन्त अधिक बुमि लुलुआवे बेसी ।
धूर-धूरैरीक’ थभकल हुक्का-चिलम पियेत रहै भतखोखरी बूढिया आ ओहि ठियाँ बेटा-पुतौहने निन्नागोइ करैत, गोबर पथैत सिमरदहीवाली दैयास’ जे ई प्रश्न पुछलिये त’ बाप रे वा, उसब त’ हमरा उन्टे गोनेर ओढ़बैत, लिदाँलद क’ देलक—
— रे जो ओम्हर, खेत खो ग’ ! कहलक जे चल गे त’ अबैछी, तोरा ला’ किछु लवै छी ! बनलै नै बनलै तैस’ हमरासबके की । ओइस’ कि हमरासबके कोनो गुजर-गुजरान चल, बन’ बला हवे से ? भतखोखरी आरो ओखियाएल- बनलै नै बनलै हमरा बेटा बार सती ! भखो नेतवासब । ओइस’ ओकरासबके हाल-रोजगार चलै-बने है । हमरा सबके ओइसबस’ कोन काम ?

गोरहा पाथ’बला ठोकराही ठेड़ा हमरापर उसरैत ललकारलक— आइ काल्हिके नेतासब कैहन है से की कहियौ । अनमन फुइस पदना पहुनासनके । चुनावमे, भोंट बेरमे निमन नाहित, चिकन-चुनमुन बात मेहिया पेघराक’ बजतै । बेरा-घड़ी निमहने उनटियो नै तकतौ । बनलै नै बनलै तैस’ हमरा की ? फखो भतारवाली मोर सियाराम ! फखो नेतवासब । ऐस’ ओकरासबके हाल-रोजगार, बैठ-बेगार चलै छलै ।

हरिशंकर भा अपना जमानके नामी-गरामी पट्टा पहलमान रहै । पछाति ओकर दिन-समय घटने, खेवा-खर्चा आ भरिगर बुतात खोराक नै पुगने, लठैत स’ डकैत बनि गेलै । ओकरा डरे खढ़ जरै तैकि, परोछामे लोक ओकरा हराशंख कहै । कोन दैव संजोगे उ हमरा भेंट गेल । पिंड छोड़ाक’ भाग’ला जे हम अपन प्रश्न ओकरास’ कैलिये त’ लागल बूढ़वा टाल ठोकिक्’ फनक’—
—है तों हमरा की पूछवे ! हमर त’ आव सबिकाहा देवी-कराह रहिये नै गेलौ । नै त’ हम सबहे नमहरका मुंहरगहा नेतासबके एके दौब-पेंचमे चारुनाल चित्त क’ दितियौ । तोहर बड़बोला प्रचण्ड आ बोलीके सिफलाहा भटराइके कोन बात कोइराला, नेपाल आ फलनाथके फालि-ढोलकी पोन्हेपर वजाक’ राजनीतिक अखाढास’ कए लगा कात क’ दितियौ । आव हम की कहियौ । अखैनता त’ हमर सके बस नै चलै हौ नइ त’ हम सबके पकैड़क’, एकटा कोठलीमे ठोकिक्’, छुलकले छोलेपर संविधान लिखा लितिये, से बूमि राख ।

ई पहलमनमा सभासद नै बनल रहै तै बातके, ओइ घड़ी हमरा बड़ छोभ भेल रहए । मनमे पछतावा हुअलागल जे संविधानसभामे एहनो मोट-मरहन्नाके आवश्यकता छलै । संसद अवरुद्ध आ विपक्षीक विरोधके हुड़दडहा मूढ़ मुख पुरूख जे संसदमे रहितै त’ सबके साडि क’ दितै ।

विचार प्रवाह

धान कुटू धनिया ... !

उत्तरदायित्व निर्वाह क’ नेता सब जनविश्वास प्राप्त करए

संविधान नइ बनाक’, संविधानसभा सहित राजनैतिक सबदल असफल भ’ गेल छै । आब एकर विस्तृत मूल्यांकन आ आवश्यक आत्मालोचना होएव एखन बहुत जरूरी छै । निश्चित रुपस’ देशके नव संरचना विकास सहित संविधान बनाएव अनिवार्य कर्तव्य होइतहुंमे, दलसब फेरु पुरनके रागमे सत्ता आ सरकार बनब’के जे जोर अजमाइस क’ रहल छै, ओकर एखन कोनो आवश्यकते नै छै । पहिने देश रहतै तहन ने करब राजनीति । देश एखन अन्तरिमो कालस’ पाछू धकला गेल छै आ नेपालमे कोनो नियम कानून छैहे नइ । ओहन ठोस आ वैधानिक निकाय जखन नै छै, तखन त’ सबके एक ठाम मिलि-बैसक’, एक दोसरापर विश्वास क’, करा क’, सम्पूर्ण राजनीतिक गतिरोधके अन्त करैत, भविष्यमे हुअबला कोनो अन्हरी दुर्घटनास’ उगरास पाब’के छै ।

जनताके, जैकि दल आ राजनीतिपरस’ विश्वास उठि गेल छै, तैं दल आ नेतासबके एखन कर्तव्य बनैछै जे देश आ जनभावनाके पक्षमे उदार आ व्यवहारिक बनि, बर्तमान राजनैतिक संकटपूर्ण अवस्थास’ उर्तीण करा’ अपन-अपन पतियार आ आगबति बनाबए । ई एकटा बड़ सुन्नर अवसर छै, जँ एकरा जन उत्तरदायित्वपूर्ण ढंगस’ निर्वाह करए ।

- जीवनाथ चौधरी

अध्यक्ष, मैथिली विकास कोष

नेपालके हाइ हाइटी आ मलेशिया सनके

संविधानसभाके मांग आ मुद्दा असलमे एमाओवादीके रहै मुदा ने ओ एकरा छजा-बना क’ निर्वाहिसकल आ ने संघीयता विरोधी नेका ऐमाले ओकरा ओहन चल’ बन’ देलकै । बातके ओहन गम्भीरता आ प्रतिबद्धतास’ नइ लेने देश बेहाथ भ’सकैए । जन भावनाअनुसारके संविधान नै जे बनतै त’ देशमे उधवा मचतै आ एहि देशके हाइ हाइटी आ मलेशिया सनके नै होएतै से के कहि सकैए !

- विजय दत्त मणि

तिनका घरमे रोदन पड़े

हे हरि हे ! जे कोइ रोके संविधानसभाके धन्धा, हे हरि हे ! तिनका घरमे रोदन पड़े, है तिनका घरमे खौराखपटा लगे ।

हे हरि हे, है जे कोइ फोरलक मिथिला आन्दोलनीपर बम तिनका घरमे रोदन पड़े, तिनका घरमे रोदन पड़े हे हरि हे ! तिनका घरमे खौरा खपटा लगे !

श्रीचन मण्डल, भुङ्गी खेलवैया

नेताके त’ बाते नै करु

अपना देशक नेता नालायक, असक्षम, अदूर्दशी आ लोभी-पापी राजनीतिक कठजीव अइ । ईसब ध्यान जे दितै त’ किछुए मासमे जनसंविधान बनाक’ जनताके सोफा राखि दितै आ कहितै हो आब जल्दीस’ चुनाव कराक’ नव नेपालक सुन्नर निर्माण कर । आब ऐस’ एकरासबके इतिहास कहियो नै माफ करतै ।

प्रा. विजय दत्त

अनमन सुगरक चोत

जीतलाहा नेतासब लायके नै छल । लोभी पापी आ कायरसब दरिद्रहा मनके रहए तएँ संविधानसभाके म्यादपर म्याद अनेरे थपने जाय । गोटे आधे छोड़िक ओहिमेके अधिकांश नेता सुगरक गुहे रहए- ने निप’ जोग ने पाथ’ जोग । नै त संविधान नै बनितै ? ओतेक दिनमे कए-कएटा संविधान बना-बनाक’, जनतामे पठा-पठा परिक्षणो सब करा, सबके मन जीति लेने रहितए ।

-कैलास दास

एगारह प्रदोश आ तीनसय २०क हस्ताक्षरक सन्देश

अनका चढैला बढैलापर लट्ठा गोइठा नै लगित त’ एमाओवादी, नका एमाले आ संयुक्त लोकतान्त्रिक मधेशी मोर्चा बीच भेल ११ प्रदेशपर ने पुनर्विचारके हौड़भेड़ मचितै आने ३२० सभासदके हस्ताक्षर अभियान चलितै । एहि हस्ताक्षर अभियान स’ खाली नेपालक राजनीति भड्ठि गेलै सैह नइ, सबहे दलके शीर्ष नेताके जेठरैयतिपर पानि फीरि गेलै । संविधानसभाके कोनो केहनो बैठक तीन दलके नेता सरिया’ कहियो नै बैस’ देलकै । बेर पड़ने मधेशीयो मोर्चाके सड़/सोडर



आब.....

कर’ पाओत जनतब देने अइ । दलगत उठापटकस’ देशक सम्पूर्ण व्यवस्था अस्तव्यस्त आ भताभड रहने राजनैतिक भठा त’ बैसले अइ, सरकार कोनो विकास-निर्माणक काज जे नइ क’ पओने अछि । एहि सालके वजेटस’ जे किछु सामाजिक आर्थिक कार्यक्रमसब केहुना करितए तकारोपर एहिस’ अट्ठबज्जर खसल अछि । एक त’ देशमे ओहिना काम चलाउ सरकार अछि जेकरा छोट-मोट दैनन्दिनीये कार्यसब मात्रे सम्पादन करवाक चाही । ओहन अवस्थामे निर्वाचन आचार संहिताक अनुसार सरकार आब त’ वजेटस’ ल’क’ नयाँ योजना वा कार्यक्रम स्वीकृत, शुरु सर्वेक्षण, अध्ययन वा अनुदान दिअ’, दिआब’सनके कोनो जेकाज नै करासकैए । ऐस’ त देशक

आर्थिक गतिविधिए चौपट भ’ जनताक सबटा काजेवात गोली गाएब भ’ जएतै । मुहँ भरै खसले परस’ जे उपर चप लधान सरकारपर ई लधाएल अछि ओहो बकटे अछि । बेरपर सचेत नइ भ’ संविधानसभास’ देशक आगूक राजनैतिक आ व्यवस्थापकीय बाट बन्न कएने सरकारके बेर-बेर एहन रंग-विरंगके कानूनी लफरास’ गुजर’ पड़ि रहल छै । हानि-बेपाइन भेल सरकारपर आचार संहिताके काठ काट’बला चुनाव आयोग उन्ते अपनो पयरपर कुइहैर हनिक’ लागि गेल अछि । कारण चुनाव करवाक सबटा विधान आ वैधानिक अधिकार फरिछाएल नै रहने आब सरकारके कोन बात राष्ट्रपतियो कोनो भूमिका सरकारक सिफारिश बेतरे कइए जे नै सकैए ।

ल’क’ सता आ खुर्सीके खेल खेलैत रहल । शीर्ष नेता देशक राजनीतिके बौह बनाक मनमानी त करबे करैत रहल, हेमओसमातल एना रहल जेना जे छी से हमही । जे करबै जे होतै से हमरे बुते । एहि विकट अहंकारके तोड़लक तीनसय अहंकारके तोड़लक तीनसय एहिस’ इहो बात साफ भेलै जे दलसब सार्वभौम नइ असल सार्वभौमक शक्ति संविधानसभा अछि आ सभासद सब बहुते किछु छथि, आ नेपालक राजनीतिके नव मोड़, मरोर सेहो द’ सकैए ।

अन्तिम अन्तिम दिन धरि दलसब संविधानसभामे, संविधान निर्माणक मुद्दासबपर मतदानमे अहू डरे नै गेल जे

बड़ सम्भव छै जे एहिस’ परिणाम बहुत हटिक’ अबि सकैए । दलसब अपन अहंकारक कारणे संविधानसभा आ नेपालक सम्पूर्ण राजनीतिके अनिर्णयके बन्दी बनबैत, बेतरिकास’ भयावह अस्थिति उत्पन्न क’ देलक । ऐमे काने दल कबरा, कोन भुवरा ? एमाओवादीम वैद्य गुपक उन्ते हर बहैत छलै त’ एमाले, कांग्रेसके मधेशी, आदिवासी जनजाति मूलक सभासद अलगे उन्ते टाल ठोकेत छल । दलसब अपन स्वार्थी कमजोड़ीके देशपर सोभे थोपि, बड़ भारी अन्हेर कएने अछि आ आब ओसब कतबो माफी माडइए, माफीक हकदार नै, धोखावाजीक कारणे दण्डक भारी अइ ।

गंगा दशहरा



कृष्ण शंकर मिश्र

“गंगा दशहरा “ पूण्य-आर्जन हेनु अति विशिष्ट दिन अछि । गंगा दशहरा में सामान्य वृत सम्पन्न क क विशिष्ट फल प्राप्त कैल जा सकैत अछि ।

एहि सम्बन्ध में राज मार्कण्डे पुराण कहने अछि - “जेष्ठ मासे सिते पक्षे दशमी हस्त -संयुता । हरते दश पापानि तस्माद दशहरा स्मृता ॥ तहिना स्कन्द पुराण से उद्घोष करैत अछि - “जेष्ठ मासे



सिते पक्षे दशमी बुधहस्तयो :। गगानन्दे व्यती पाते कन्या चन्द्रे वृषे रवौ ॥ दशयो गे सेतु मध्ये लिंगरुपघरं हरम् । रामो -वै स्थापयाभास शिव लिङ्ग मनुन्त म म् ॥ अनेक ग्रंथ मे सेहो गंगा दशहरा के विषय मे स्पष्ट उल्लेख कैल गेल अछि - “यां काचित् सरितं प्राप्य दघाअर्घ तिलो दकम् । मुच्यते दशभिः पापैः स महापात कोप -भैः । अस्यामेव सेतुबन्धे रामेश्वर दर्शनम् । एहि तरहे ई स्पष्ट अछि जे गंगा दशहरा में मात्र स्नाना , अर्घदान , शिवलिङ्ग चर्न गंगा स्नान , सामान्य दान आदि सँ असामान्य फल प्राप्त कएल जा सकैत अछि । एतवे नहि जँ गंगा स्नान संभव नहिँ भेल त कोनो नदीमे स्नान क’क’ विशेष फल प्राप्त कएल जा सकैत अछि । गंगा दशहरा पाप मोचन हेतु सेहो प्रसिद्ध अछि । एहि दिन गंगा स्नानक फल वउ विशिष्ट कहल गेल अछि । जँ एहि विषयमे विचार कएल जाए त गंगा स्नानक औचित्य सहजे बुझल जा सकैत अछि । गृष्म ऋतु जकर प्रचण्ड गर्मी सँ युक्त जेष्ठ मास-शीतल जलमे साधारण स्नान हेतु स्वभावतः उपयुक्त अछि आ गंगाजलमे स्नान त विशेष होइतहि छैक । गंगाजल वस्तुतः स्वाभाविकक रुप सँ प्राप्त होइत छैक । किएक त गंगोत्री सँ पिघलल हिमक जल एही ऋतुमे अवैत छैक । अन्य ऋतुमे पिघलल हिमयुक्त जल भेटवै कठिन होइत छैक । तँ जेष्ठमासक चन्द्रमा सँ युक्त पक्षमे दशमी तिथि के महत्वपूर्ण मानल गेल अछि । भागवत पुराण मे स्पष्ट उल्लेख अछि जे गंगा स्नानक उद्देश्य सँ कएल यात्रामे डेग-डेगमे अश्वमेघ, राजसूय आदि यज्ञक फल सुलभे रहैत छैक । आधुनिक विद्वान लोकनि गंगाजलक महिमाके पूर्णतः स्विकार करैत छथि । गंगा माहात्ममे अतेक धरि कहल गेल अछि -“तव तट निकटे यस्य निवासः खलु वेकुण्ठे तस्य निवासः” अर्थात गंगा दशहरा सनक विशिष्ट दिनमे गंगा स्नान करब सर्वथा उचिते अछि ।

तांत्रिक दृष्टिसँ सेहो गंगा दशहरा महत्वपूर्ण अछि । जे अनुष्ठान अनेक दिन अनेक तरहे कैला उत्तर सम्पन्न होइत अछि । ओ अनुष्ठान गंगा दशहरा दिन एकहि दिन अथवा रात्रीमे सम्पन्न कैल जा सकैत अछि । कानो-कोनो विशेष अनुष्ठान त गंगे दशहरा दिन सम्पन्न करवाक निर्देश भटैत अछि तन्त्र शास्त्र मे ।

ते धार्मिक वैदिक तान्त्रिक औ वैज्ञानिक चारु दृष्टिसँ गंगा दशहरा वड़ महत्वपूर्ण अछि ।

जय माँ
वैभव लक्ष्मी

